साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2553, कार्तिक पूर्णिमा, २ नवंबर, 2009 वर्ष 39 अंक 5

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

तण्हाय जायती सोको, तण्हाय जायती भयं।
तण्हाय विप्पमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं॥

धम्मपद- २१६, पियवग्गो

(छः द्वारों पर होनेवाली) तृष्णा से शोक उत्पन्न होता है, तृष्णा से भय उत्पन्न होता है। तृष्णा से विमुक्त (व्यक्ति) को शोक नहीं होता, फिर भय कहां से होगा?

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

[बुद्धजीवन-चित्रावली के सभी चित्र बन कर तैयार हो गये हैं। फ्रेमिंग के बाद इन्हें **आर्टगैलरी में यथास्थान सजाया जा रहा है।** *(बुद्धकालीन ऐतिहासिक घटनाओं की ये चित्रकथाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि बुद्ध ने लोगों को सही माने में प्रज्ञा में स्थित होना सिखाया। स्थितप्रज्ञ* **'ठितपञ्ञो'** *होने की ही शिक्षा दी। उन्होंने किसी एक व्यक्ति को भी* **'बौद्ध'** *नहीं बनाया, बल्कि धार्मिक बनाया। पूरे तिपिटक में 'बौद्ध' शब्द ढूंढने से भी नहीं मिलता। जो मिलते हैं वे–* **'धम्मी, धम्मिको, धम्मट्ठो, धम्मचारी, धम्मविहारी'** *.. आदि ही मिलते हैं। उन्होंने शील, समाधि और प्रज्ञा द्वारा विपश्यना का अभ्यास करना सिखाया। वे स्वयं प्रज्ञा में स्थित हुए और उनके बताये मार्ग पर चलने वाले लोग किस प्रकार प्रज्ञा में स्थित हुए– ये बातें इन चित्रों और चित्रकथाओं में स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी हैं।)*

इन चित्रों की वृहत् पुस्तक **'बुद्धजीवन-चित्रावली' सजिल्द** *छप गयी है जो कि अत्यधिक आकर्षक, टिकाऊ और सुंदर है।* **वी.सी.डी.** *भी बना रहे हैं।*

इस चित्रावली की अनेक चित्र-कथाओं को हम पहले से ही प्रकाशित करते आ रहे हैं। अब जो कथाएं शेष हैं, उन्हें ही आगे बढ़ायेंगे। सं.]

चित्र-२८. उरुवेल की कुटिया में क्रुद्ध नागराज

साठ अरहंत धर्मदूतों को भिन्न-भिन्न मार्गों पर बहुजन हित-सुख के लिए भेज कर भगवान स्वयं भी इसी उद्देश्य से उरुवेल के वनप्रदेश में जा पहुँचे। वहां निरंजरा नदी के तट पर जटाधारी उरुवेल काश्यप अपने ५०० जटाधारी शिष्यों के साथ हवन-यज्ञ के कर्मकांडों में निरत रहता था। नदी के बहाव की ओर आगे उसका भाई जटाधारी नदी काश्यप अपने ३०० शिष्यों के साथ, और उससे आगे दूसरा भाई जटाधारी गया काश्यप २०० शिष्यों के साथ रहता था।

भगवान उरुवेल काश्यप से मिले और उससे निवेदन किया कि उन्हें आश्रम की यज्ञशाला में कुछ समय के लिए ठहरने की अनुमति दे। उरुवेल काश्यप नहीं चाहता था कि कोई श्रमण उसकी यज्ञशाला में निवास करे। इसलिए उसने यह कह कर मना कर दिया कि संपूर्ण यज्ञशाला भरी हुई है। इस समय कोई स्थान खाली नहीं है। परंतु समीप की एक कुटिया में रहने की अनुमति दी और साथ-साथ यह भी बता दिया कि उस कुटिया में एक अत्यंत भयंकर, विषधर नागराज रहता है। जो इस कुटिया में प्रवेश करता है, उसे वह डस लेता है और मार देता है।

भगवान ने कहा – मुझे कोई डर नहीं। मैं उसमें रह सकता हूं।

दिन ढलते ही भगवान ने उस कुटिया में प्रवेश किया। किसी को आया देख कर नागराज क्रुद्ध हो उठा और भयंकर रूप से फुंकारने लगा। भगवान ने उसे धर्मबल से शांत किया। भगवान ध्यान में बैठ गये। प्रातः होते ही लोगों ने सोचा कि वह सुंदर, सुडौल महाश्रमण मार डाला गया होगा। परंतु कुटिया का दरवाजा खोलने पर सब को यह देख कर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि भगवान शांत मुद्रा में बैठे ध्यान कर रहे हैं और नागराज भगवान की मैत्री-तरंगों से अभिभूत होकर मंत्रमुग्ध-सा उनके सामने लेटा हुआ है। लोगों ने भगवान से पूछा – क्या आपको इस जहरीले नागराज के साथ रात बिताते हुए भय नहीं लगा?

कैसे भय लगता? भगवान अरहंत थे। स्थितप्रज्ञ थे।

नागराज की जहरीली फुंकार से न तो उन्हें भय लगा और न उस पर क्रोध जागा।

स्थितप्रज्ञ अरहंत वीतभय और वीतक्रोध होता है। तभी कहा गया –

विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः॥

– (भगवद्गीता – ५.२८)

– वह इच्छा, भय और क्रोध के मनोविकारों से सदा विमुक्त रहता है।

कोई क्रुद्ध होकर फुंकारे तो भगवान बदले में समता का धर्मबल प्रकट करते हैं। वे वीतकाम हैं, अतः वीतशोक हैं, वीतभय हैं। वे मैत्री और करुणा की बौछार करते हैं। क्योंकि वे अरहंत हैं, स्थितप्रज्ञ हैं।

कामतो जायती सोको, कामतो जायती भयं।
कामतो विप्पमुत्तस्स, नत्थि सोको कुतो भयं॥

– (धम्मपद २१५, पियवग्गो)

– काम (कामना) से शोक उत्पन्न होता है, काम से भय उत्पन्न होता है। काम से विमुक्त (व्यक्ति) को शोक नहीं होता। फिर भय कहां से होगा?

विश्व विपश्यना पगोडा के शेष निर्माण कार्य

विश्व विपश्यना पगोडा का निर्माण कार्य पूरा हुआ। इसके निर्माण में ११ वर्ष लगे और जमीन की कीमत छोड़ कर, लगभग ८० करोड़ की लागत आयी। इसमें व्यक्तिगतरूप से भारत तथा विश्व के अनेक साधकों ने भाग लेकर असीम पुण्य अर्जित किया।

विश्व के विशिष्ट और अनमोल भवनों में अनुपम यह पगोडा, जितना विशाल है उतना ही आकर्षक भी होना चाहिए। इसके लिए अभी इस क्षेत्र में बहुत काम करने शेष हैं। इसलिए चाहें तो विपश्यना से जुड़े हुए सभी लोग व्यक्तिगत रूप से तथा **सभी विपश्यना केंद्र** भी अपनी इच्छा एवं सामर्थ्यानुसार न्यूनाधिक भाग लेकर विपुल पुण्यार्जन के भागीदार बन सकते हैं।

वस्तुतः इस पगोडा के शेष महत्त्वपूर्ण कार्य इस प्रकार करवाने हैं: –

१. विश्व विपश्यना पगोडा का सौंदर्यीकरण

पगोडा की अलंकरण-सज्जा (आर्नामेंटल डिजाइन), केनोपी (चँदोवा) तथा खंभों आदि को सुंदर बनाना, पगोडा पर **सुनहरा रंग** लगाना, परिक्रमा-पथ पर धूप-रोधी आयातित संगमरमर लगाना आदि के लिए लगभग रु. २,००,००,०००/- (रु. दो करोड़) की लागत आंकी गयी है।

२. पगोडा का भू-दृष्य-निर्माण (लैंड-स्केपिंग)

सुंदर पगोडा-परिसर, सुंदर पार्क, **सड़कें** तथा **पुल** बनाना, पानी की पाइपलाइनें लगाने आदि महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए कुल रु. २,५०,००,०००/- (रु. दो करोड़, पचास लाख) की लागत का अनुमान है।

३. चित्र प्रदर्शनी कक्ष तथा स्वागत कक्ष

ऐतिहासिक **चित्र प्रदर्शनी कक्ष** तथा **स्वागत कक्ष** के लिए कुल रु. २,००,००,०००/- (रु. दो करोड़) की लागत का अनुमान है।

४. पगोडा के दक्षिण में छोटे पगोडा का निर्माण

यह छोटा पगोडा धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र से जुड़ा है और इसके भीतर चार मंजिलों में साधना के लिए १०८ शून्यागारों (कोठरियों) का निर्माण हो रहा है। बाहर से उत्तर के छोटे पगोडा जैसा ही दिखेगा। इसके निर्माण में **प्रति शून्यागार** की लागत लगभग रु. १,५०,०००/- (एक लाख, पचास हजार) आंकी गयी है।

५. अतिथिशाला का निर्माण

दूर-दूर से आने वाले यात्रियों के विश्राम एवं नित्यकर्म की सुविधा हेतु अतिथिशाला का निर्माण आवश्यक है। तदर्थ दो अतिथियों के लिए वातानुकूलित, शौचालययुक्त प्रति कमरे पर लगभग रु. ६,००,०००/- (छह लाख) की लागत आयेगी।

विश्व शांति की इस महामंगल योजना में चाहें तो आप भी अपना योगदान दे सकते हैं।

ऑन लाइन दान भेजने के लिए विवरण इस प्रकार हैं -- www.globalpagoda.org/donation.aspx?parentid=6&levelid=

भारत भर में (कोर बैंकिंग) के लिए नाम – **ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन**, **बैंक ऑफ इंडिया**, पता – स्टॉक एक्सचेंज शाखा, फोर्ट, मुंबई-४०००२३. बचत खाता क्र. ००८६१०१०००११२४४, एम.आई.सी.आर. नं. ४०००१३०५१.
आईएफएससी कोड- बीकेआईडी०००००८६.

भारत के बाहर से दान (स्विफ्ट ट्रांस्फर) के लिए – नाम- **ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन, बैंक ऑफ इंडिया,** पता – स्टॉक एक्सचेंज शाखा, बचत खाता क्र. ००८६१०१०००११२५०, जेजीभाई टावर्स, दलाल स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

बैंक का निर्देश है कि – (कृपया मूलतः अंग्रेजी में देखें)

From USA – Union Bank of California International - NEW YORK has account code BOFCUS33NYK for transferring the funds to Bank of India to Mumbai (Bombay) Treasury Branch – US # Account No. 912002201121 and further transferring this sum to Bank of India – Stock Exchange Branch. Their Swift Code Number is BKIDINBBA-BLD. Further, Instruction may be given to transfer this sum to Global Vipassana Foundation S.B. Account No. 008610100011250. Copy of communication may please be enclosed to: kamlesh@kkc.in

किसी प्रकार की अन्य जानकारी या पोस्ट से चेक आदि भेजने के लिए कृपया निम्न पते पर संपर्क करें –

संपर्कः "ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन", द्वारा- खीमजी कुँवरजी एंड कं., ५२, बांबे म्युचुवल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड, मुंबई- ४००००१. (फोन- ०२२- २२६६२५५०,
ईमेल- shivji@khimjikunverji.com

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २०१० के लिए विज्ञप्ति'

तीन महीने का गहन 'पालि-अंग्रेजी' प्रारंभिक पाठ्यक्रम

इस वर्ष तीन महीने का **'पालि-अंग्रेजी'** पाठ्यक्रम **१८ मई २०१०** (सुबह) **से १८ अगस्त २०१०** (सुबह) तक प्रारम्भ किया जा रहा है। (विदेशी छात्रों को **"छात्र वीसा"** के साथ आना अनिवार्य हैं ।)

एक महीने का गहन 'पालि-हिंदी' पाठ्यक्रम

एक महीने का **'पालि-हिंदी'** पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जा रहा है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **१ मई २०१०** (सुबह) **से ३० मई २०१०** (सुबह) तक बिना अवकाश के चलेगा । (छात्रों को २९ अप्रैल को धम्मगिरि पहुँचना होगा।)

प्रवेश योग्यताएं –

वे साधक जिन्होंने --

१. तीन १०-दिवसीय विपश्यना शिविर तथा एक सतिपट्ठान शि. किये हों।

२. एक वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों ।

३. एक वर्ष से पंचशील का नियमित पालन करते हो ।

४. कम से कम १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०१०** है।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य / वरिष्ठ सहायक आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

पंजीकरण हेतु ऑनलाइन फार्म भरने के लिए उपलबध लिंक – www.vridhamma.org/Pali-Study-Programme.aspx या विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि को लिख कर फार्म प्राप्त करके आवेदन करें।

विपश्यी साधकों के लिए तीर्थ यात्रा

भारतीय रेलवे की पर्यटन शाखा (आई. आर. सी. टी. सी.) ने **महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस** नामक एक विशेष वातानुकूलित रेलगाड़ी चलायी है जो बुद्ध से संबंधित पवित्र स्थलों – लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, श्रावस्ती, राजगीर तथा कुशीनगर आदि स्थानों की तीर्थ यात्रा कराती है। विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें – www.railtourismindia.com/buddha

विपश्यी साधकों के लिए आराम से तीर्थ यात्रा पर जाने का यह सुनहरा अवसर है। इसमें न तो आपको सब जगहों के लिए टिकट कटाने की माथा-पच्ची करनी होगी, न लाइन में लगना होगा और न ही भिन्न-भिन्न जगहों पर स्थानीय वाहन और होटल की व्यवस्था करने की चिंता रहेगी।

ग्लोबल विपस्सना पगोडा ने विपश्यी साधकों के लाभार्थ आई. आर. सी. टी. सी. से २१% की विशेष छूट का प्रबंध किया है। आई. आर. सी. टी. सी. और ग्लोबल विपस्सना पगोडा ने इसके अतिरिक्त इस बात पर भी सहमति जतायी है कि विपश्यी साधकों के लिए दो बार सामूहिक साधना का भी प्रबंध होगा। लेकिन यह तभी संभव हो पायगा जब कि एक ट्रेन पर कम से कम दस विपश्यी साधक हों। पहली सामूहिक साधना बोधगया के बोधिवृक्ष के नीचे और दूसरी कुशीनगर में आयोजित की जायगी। सामूहिक साधना का समय मंदिर बंद हो जाने के बाद होगा, ताकि आने-जाने वाले यात्रियों से शांति-भंग न हो और साधकों को साधना के लिए शांत वातावरण मिले। यह भी तभी संभव हो पायगा जब कि उस दिन मंदिर परिसर में कोई अन्य कार्यक्रम न हो।

महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस दिल्ली से चलेगी और दिल्ली ही वापस आयगी।

समय-सारणी

दिल्ली से गाड़ी छूटने और वापस दिल्ली पहुँचने की तिथियां

छूटने के महीने	छूटने की तिथि	वापस पहुँचने की तिथि
२००९ नवंबर	७ और २१	१४, व २८ नवंबर
२००९ दिसंबर	१२ और २६	१९ दिसंबर और २ जनवरी
२०१० जनवरी	९ और ३०	१६ जनवरी और ६ फरवरी
२०१० फरवरी	१३ फरवरी	२० फरवरी
२०१० मार्च	६ और २०	१३ और २७ मार्च

किराया-सूची

आठ दिनों की यात्रा का खर्च तथा पूरा किराया नीचे की तालिका में देखें-- (५ से १२ वर्ष के बच्चों का किराया इसका आधा होगा, परंतु ५ वर्ष से कम उम्र के बच्चों से किराया नहीं लिया जायगा।)

श्रेणी (सभी वातानु.)	पूरा किराया		२१%छूट के बाद देय किराया	
	रुपये	US $	रुपये	US $
प्रथम श्रेणी (कूपे)	५३,२७०/-	११५०	४२,०८३/-	९०८
प्रथम श्रेणी	४८,६५०/-	१०५०	३८,४३३/-	८३०
द्वितीय श्रेणी	४१,६५०/-	८७५	३२,९०३/-	६९२
तृतीयश्रेणी	३४,६५०/-	६६५	२७,३७३/-	५८१

इसके बारे में विस्तार से जानने और बुकिंग के लिए संपर्क करें :--

श्री इजहार आलम, मो. ०९८९१३७३५४९ या श्री अरुण श्रीवास्तव, आई. आर. सी. टी. सी., ग्राउंड फ्लोर, एस.टी.सी. बिल्डिंग १, टॉलस्टोय मार्ग, नई दिल्ली ११०००१. फोन ९१-११-२३७०-११००, २३७०-११०१, ०९७१७६४०४५२. website: www.railtourismindia.com/buddha
इमेल: arunsrivastava@irctc.com; buddhisttrain@irctc.com

यहां यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण के पूर्व अपने प्रिय शिष्य आनंद को इन स्थलों के बारे में क्या कहा था –

आनंद! चार स्थल हैं जिन्हें देखकर श्रद्धावानों में श्रद्धा तथा आदर का भाव जागेगा। ये स्थल कौन-कौन से हैं? प्रथम – जहां तथागत पैदा हुए, द्वितीय – जहां उन्होंने बोधि प्राप्ति की, तृतीय – जहां उन्होंने धर्मचक्र का प्रवर्त्तन किया और चतुर्थ – जहां तथागत ने अनुपाधिशेष निर्वाण की प्राप्ति की।... इनके दर्शन कर वे अपने चित्त को प्रसन्न करेंगे और चिरकाल तक हितसुखलाभी होंगे।

(महापरिनिर्वाण सुत्त)

ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन और साधकों के बीच संपर्क-सूत्र

फाउंडेशन की ओर से साधकों को त्वरित सूचना देने के लिए **एस.एम.एस.** के द्वारा संपर्क-सूत्र बनाया जा रहा है ताकि **विपश्यना** संबंधी कोई भी जानकारी साधकों तक यथाशीघ्र पहुँचाई जा सके। इसके लिए (केवल) **साधक** अपने मोबाइल से निम्न प्रकार एस.एम.एस. भेज कर अपने आपको रजिस्टर करायें। **GVF SMS Message Center** पर रजिस्टर हो जाने पर आपका पूरा नाम, फोन नं., स्थान का नाम और ईमेल-पता, शि.सं. हमारे यहां अंकित हो जायगी। इसके लिए आपके मोबाइल फोन से ***575758*** को यह संदेश भेजें – **'vipassana' 'आपका नाम' 'आपका उपनाम' 'शहर' 'ईमेल'** (यदि हो) **'शिविर संख्या'** (अर्थात कुल शिविर किये = १४) **उदाहरणार्थ – Vipassana Gautam Parekh Mumbai gparekh99@xyz.com 14** तदर्थ साधक को मात्र ३/- रुपये खर्च करने होंगे।

भविष्य में यदि यह सुविधा नहीं चाहिए तो आपको केवल **'stop vipassana'** यह संदेश 575758 पर भेजना होगा। इसके लिए फिर आपको रु. ३/- का शुल्क लागू होगा। सूचना मिलने का कोई शुल्क नहीं देना होता।

ध्यान देने की बात यह है कि फिलहाल कोई साधक इस माध्यम द्वारा हमसे सीधे संपर्क नहीं कर पायेगा बल्कि मात्र हमारी ओर से बड़ी मात्रा में (मास स्केल पर) सूचना भेजी जा सकेगी, जैसे कि **एक दिवसीय शिविर** की सूचना, कोई कार्यक्रम अचानक रद्द हुआ या यथाशीघ्र कोई नया कार्यक्रम बना। आदि...

आपका नाम रजिस्टर हो जाने पर आपके मोबाइल पर निम्न प्रकार से सूचना आ जायगी – **"Thank you for registering with Global Vipassana Foundation (GVF) SMS Message Center. May All Be Happy."**

विश्व विपश्यना पगोडा में १७ जनवरी, २०१० के कृतज्ञता सम्मेलन में भाग लेने वालों से नम्र निवेदन

कृपया अपने आसपास के साधकों पर ध्यान देकर देखें कि क्या आप किसी ऐसे साधक को जानते हैं जो प्रथम दस वर्षों (**जुलाई १९६९ से १९७९ अंत** तक) में **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में विपश्यना का एक भी शिविर ले चुका हो, लेकिन हो सकता है आज वह किसी कारणवश –

१. विपश्यना नहीं कर पा रहा हो या इससे विमुख हो गया हो, अथवा
२. किसी दूसरे साधना-मार्ग का अनुसरण करने लगा हो, अथवा
३. किसी दूसरे नाम से औरों को सिखाने लगा हो।

जो भी हो, वे सभी साधक धन्यवाद के पात्र हैं। उन सब को **सपरिवार "कृतज्ञता सम्मेलन"** में आने के लिए आमंत्रित करना है। अतः उनका वर्तमान पूरा नाम-पता, फोन नं., ईमेल और उनके प्रथम शिविर में भाग लेने की तिथि व स्थान आदि लिख भेजें, तथा औरों को भी लिख भेजने के लिए कृपया प्रेरित करें।

सभी आचार्य, वरिष्ठ सहायक आचार्य, सहायक आचार्य तथा बालशिविर शिक्षक, धम्मसेवक, ट्रस्टीज और अन्य साधक भी **सपरिवार** इस **"कृतज्ञता सम्मेलन"** में भाग लेने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

कृपया अपने, अपने परिवार तथा मित्र-परिचितों के नाम सहित आने वाले **सभी सदस्यों** की सूचना निम्न संपर्क पते पर अवश्य भेजें / भिजवाएं ताकि यथासमय **आप सब के भोजन** आदि का समुचित प्रबंध किया जा सके।

संपर्कः कु. भावना गोगरी या कु. नमिता बजाज,
विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जिला- नाशिक, (महाराष्ट्र) Email: globalpagoda17jan@gmail.com
फोन – मो. +९१-९९६७८७१६४४, +९१-९८१९६१५४२६, ०२५५३-२४४०८६, २४४०७६, (प्रातः १० से सायं ५ बजे के बीच).

मंगल मृत्यु

➲ पूना की ८६ वर्षीया वयोवृद्ध विदुषी श्रीमती ऊषाताई मोडक ने विपश्यना के शिविरों से जो लाभ अर्जित किया उसे जन-जन तक पहुँचाने में अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। विपश्यना की पूर्ण आचार्या बन कर महाराष्ट्र के पश्चिमी केंद्रों की सेवा करते हुए लोगों को यही सीख देती रही कि केवल बौद्धिक ज्ञान से संतुष्ट मत हो बल्कि धर्म का अभ्यास करते हुए उसे जीवन में उतारो। सामान्य बीमारीवश अस्पताल गयीं और अंतिम समय तक मैत्रीचित्त से सभी मिलने वालों को यही कहती रही कि तुम्हारा भला हो। सजग रहते हुए २९ सितंबर, २००९ को उन्होंने पुत्र अशोक और अन्य साधकों की उपस्थिति में साधनारत अंतिम सांस ली। उन्होंने अपने सभी अंगों का लिखित दान किया हुआ था। अतः पार्थिव शरीर का कोई संस्कार नहीं किया गया। दिवंगता का रज-रज औरों के ही काम आया। धन्य हुई विपश्यना एवं दिवंगता भी।

➲ अटलांटा, अमेरिका के मि. फ्रेड निकल्स ने ९८ वर्ष की पकी हुई आयु में १० अक्टूबर, २००९ की रात अत्यंत शांतचित्त से अपना शरीर छोड़ा। उन्होंने पहला शिविर १९७७ में दिल्ली में और ७वां १९८५ में अमेरिका में किया था। पत्नी के साथ नियमित साधना करते थे। लैटिन अमेरिका में विपश्यनाचार्य के रूप में सेवा देने वाले उनके पुत्र मि. अर्थर निकल्स ने लिखा है कि जब भी वे अटलांटा जाते तब सब मिल कर सामूहिक साधना करते। अर्थर की मां स्वस्थ प्रसन्न हैं। साधना करते हुए सब ने दिवंगत को विदायी दी। दिवंगत का मंगल हो!

➲ सूरत के वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री लक्ष्मीनारायण खेमका ने भारत तथा बर्मा में विपश्यना के अनेक शिविरों का संचालन किया और अनेकों के मंगल में सहायक हुए। ७९ वर्ष की पकी हुई अवस्था में शरीर के कष्टों से गुजरना पड़ा

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

परंतु समता बनी रही और उन्होंने २५ सितंबर, २००९ को अत्यंत शांतिपूर्वक अंतिम सांस ली। दिवंगत का मंगल हो!

➲ नाशिक के श्री श्रवणकुमार अग्रवाल कमजोर पैरों के बावजूद विपश्यना से अंतिम क्षण तक जुड़े रहे। घर पर तथा अन्य स्थानों पर सामूहिक साधना एवं एक दिवसीय शिविर की व्यवस्था करवाते रहे तथा नाशिक विपश्यना केंद्र की सेवा में सदा तत्पर रहे। १५ अगस्त २००९ को उन्होंने अंतिम सांस ली। अतुल सेवाओं के फलस्वरूप उनका बहुविधि मंगल हो!

आवश्यकता है

धम्मपाल, भोपाल के लिए सवैतनिक केंद्र-व्यवस्थापक तथा शिविर-व्यवस्थापक की, उम्र ४० से ६० वर्ष। **संपर्क –** धम्मपाल विपश्यना केंद्र के पते पर.

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. डॉ. हमीर एवं डॉ. (श्रीमती) निर्मला गानला, पुणे.
गोवा, कोंकण और प. महाराष्ट्र सहित धम्मानन्द, धम्मपुण्ण तथा धम्मालय की सेवा

३-४. डॉ. रूप ज्योति एवं श्रीमती बीना ज्योति, नेपाल.
धम्मचितवन तथा धम्मतराई की सेवा

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री जनकराज अधिकारी, नेपाल.
धम्मचितवन की सेवा में आचार्य की सहायता

२. ब्रि. जन.(अवकाश) श्री पूर्ण प्रसाद ढकाल, नेपाल. *धम्मविराट की सेवा में आचार्य की सहायता*

३. श्री भक्त प्रसाद पौडयाल, नेपाल. *धम्मतराई की सेवा में आचार्य की सहायता*

4. Mr. Kenneth Truedsson, *Sweden*
To serve Dhamma Sobhana

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री किशोर देसाई, मुंबई
२. श्री जॉन जैकब, कोट्टायम, केरल
३. श्री बी. रवींद्रन, कोच्चि, केरल
४. श्रीमती रेणुका मेहता, मदुराई
5. Mrs. Norma Liu, *Taiwan*
6. & 7. Mr. Laith & Mrs. Melanie Wark, *Australia*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री घनश्याम गौतम
(U Soe Thu, Myanmar)
2. Mr. Michael Abbott, *UK*
3. Mr. Adam Roberts, *UK*
4. Ms. Annie Del Bove, *France*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्री सागर कुलकर्णी, लातूर
२. श्रीमती निरुपमा पटेल, सूरत
३. सुश्री प्रवीणा परमार, सूरत
४-५. श्री उत्कर्ष एवं श्रीमती किन्नरी देसाई, नवसारी
6. Samanera Anuradhapura Chandaratana, *Sri Lanka*

दोहे धर्म के

ज्यों अनंत आकाश में, बहती विविध बयार।
नभ मंडल अविचल रहे, समता धार अपार॥

भोग सके तो भोग ले, जगती के सब भोग।
सच्चे सुख का भोग तो, अनासक्ति के योग॥

ना मरने का भय हमें, ना जीने का लोभ।
समय पके तो चल पड़ें, होय न मन में क्षोभ॥

साम्य धर्म कायम रहे, दूर रहे आक्रोश।
कड़वे कड़वे बोल सुन, खो बैठूं ना होश॥

सुख दुख में उलझा रहा, सदा रहा संतप्त।
सुख दुख लागे एक से, होय नहीं उत्तप्त॥

सम्पद जाए या रहे, मिले मान अपमान।
धीर पुरुष अविचल रहे, सुख दुख एक समान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरम धार निरमळ हुवै, के राजा के रंक।
रोग सोक चिंता मिटै, निरभय हुवै निसंक॥

मिंदर मिंदर डोलतां, मिट्या न मन रा क्लेस।
धरम धार उजळो हुयो, काळख रही न सेस॥

भर्‌यो र'वै मन धरम स्यूं, निरभय र'वै निसंक।
अगलै छण के होवसी, र'वै न मन आतंक॥

होग्यी दूर उदासियां, हुयी निरासा छीण।
बाजै भेरी धरम री, बाजै सुख री बीण॥

जग री देख असारता, जगी मुक्ति री चाह।
बढ्‌यो धरम रै पंथ पर, मिलगी सीतळ छांह॥

जनम जनम होतो रह्यो, म्रत्यू स्यूं भयभीत।
धरम जग्यो निरभय हुयो, हुयी मौत पर जीत॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2553, **कार्तिक पूर्णिमा,** २ **नवंबर, 2009**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org